ISSN-2320-4494
RNI No.MAHAUL03008/13/2012-TC
UGC Approved

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Refereed Research Journal

VOLUME-I
ISSUE-XX

Oct-Dec.2017

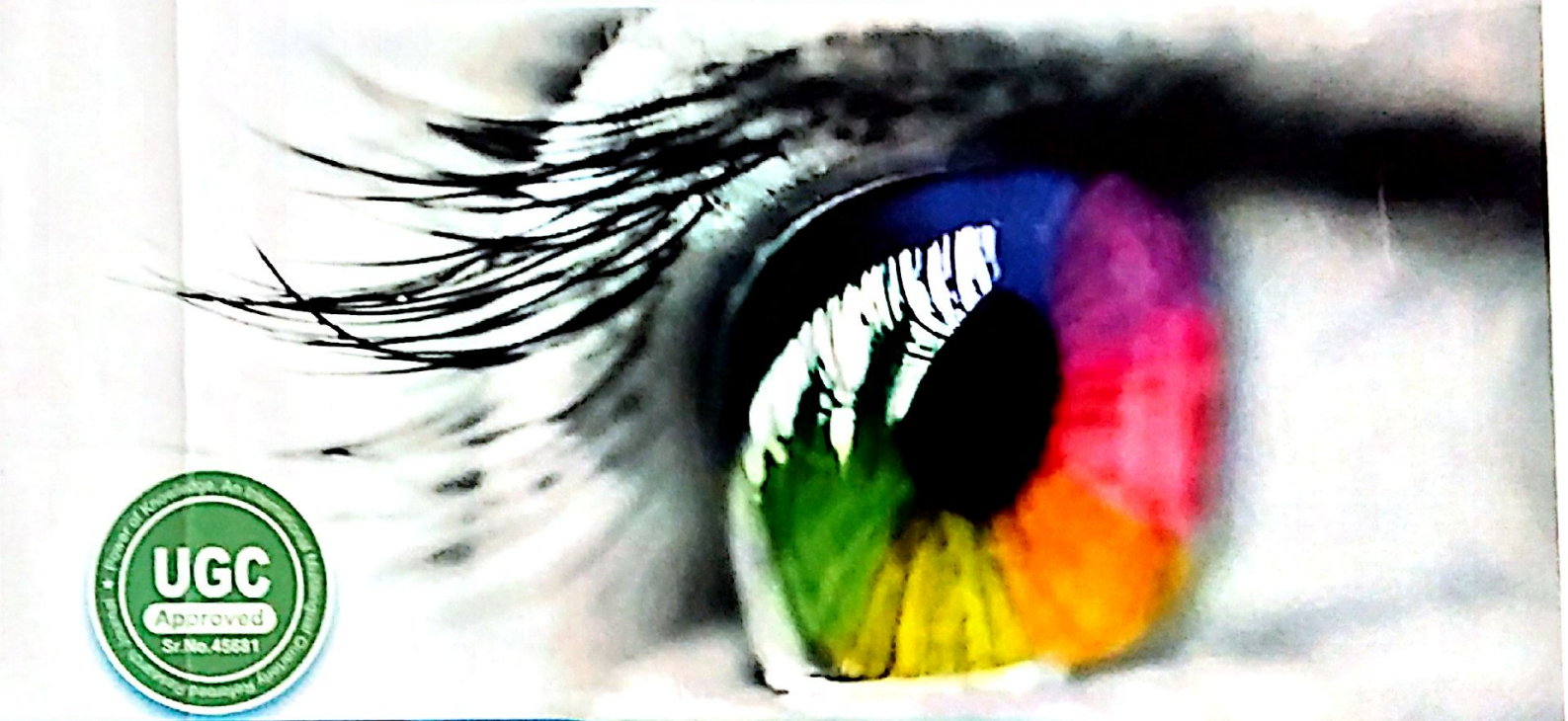

UGC Approved Sr.No.45881

ARTS | COMMERCE
SCIENCE | AGRICULTURE
EDUCATION | MANAGEMENT
MEDICAL | ENGINEERING & IT I LAW
PHARMACY | PHYSICAL EDUCATION
SOCIAL SCIENCE | JOURNALISM

Editor
Dr. Sadashiv H. Sarkate

Scanned by CamScanner

२२	बीड जिल्हयातील डाळींब फलोत्पादन शेतीचा भौगोलिक अभ्यास	प्रा. श्रीमती एम.एस. टकाड प्रा. डॉ. मधुकर गणपतराव राजपांगे
२३	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि संसदीय लोकशाही	प्रा. डॉ. नरवाडे भाऊराव माधवराव
२४	मराठी निर्मितीचा पुनर्विचार : एक अभ्यास	प्रा.डॉ.सदाशिव सरकटे
२५	अहमदनगरच्या इतिहासात ज्ञानोदय नियतकालिकाचे योगदान	सुरेखा दिनेश गांगुर्डे
२६	महाराष्ट्र राज्याच्या भांडवली खर्चाच्या प्रवृत्तीचे विश्लेषण	डॉ.संजय तळतकर
२७	योगाव्दारा वृध्दावस्थेत निरोगी राहण्याचा मंत्र	डॉ.लीला बनसोडे
२८	माळवा प्रांतातील मराठेकालीन प्रशासन व्यवस्था	डॉ.सुशीलकुमार शंकरराव सरवदे
२९	मन्नु भंडारी कृत आपका बंटी : अभिव्यंजना शिल्प	प्रा.डॉ.सुलक्षणा जाधव संज्योती जगन्नाथ रोठे
३०	इक्किसवी सदी की हिंदी कविताओं मे व्यक्त नारी चित्र	प्रा.डॉ.द्वारका गिते-मुंडे
३१	स्त्री विमर्श हिंदी साहित्य में नारी जीवन	प्रा.डॉ. न.पु. काळे
३२	दलित जीवन की व्यथा और मुक्तिपर्व	प्रा.डॉ.पवन नागनाथराव एमेकर
३३	संतसाहित्यातून प्रकट झालेले पर्यावरण विषयक दृष्टिकोन	प्रा.प्रधान रामकृष्ण ज्योतिबा
३४	आदिवासींची सांस्कृतिक पार्श्वभूमी	प्रा. डॉ. जगतवाड एस. पी.
३५	Exchange Rate and Foreign Trade of India : An Analysis of the Causal Relationship (१९९०-९१ to २०१०-११)	Dr. Maroti V. Tegampure
३६	सत्यशोधकीय विचाराच्या प्रसार प्रचारात कादंबरीचे योगदान	डॉ.सौ.जयदेवी पवार
३७	सत्य और असत्य और लड़ाई नाटक	प्रा.बिरादार उमाकांत अनेपा
३८	अहिल्याबाई होळकरांनी भिल्ल आदीवासी जमातीसाठी केलेले प्रशासकीय कार्य	सोनवणे सुजाता रामदास
३९	देवनागरी लिपि का स्वरुप एवं महत्त्व	डॉ. मीना खरात
४०	मराठी नाटकाची आरंभीक स्थिती	डॉ. गजानन पां. जाधव
४१	तुळाजी आंग्रे आणि बाळाजी बाजीराव संबंध	प्रा. डॉ. एम. जी. मोरे
४२	हूमायूँ का मखबरा	प्रा. डॉ. शेख कलीम मोहियोद्दीन
४३	दलित नियतकालिके आणि अस्मितादर्शची वाटचाल	प्रा.सर्जेराव रणखांब
४४	क्रीडा पत्रकारितेचे बदलते स्वरुप : नवे आकलन	प्रा.उमेश रामचंद्र साडेगावकर
४५	परिवर्तनवादी धार्मिक चळवळी : एक संक्षिप्त आढावा	प्रा.डॉ.बी.एन.कवाळे

Scanned by CamScanner

`` हूमायूँ का मखबरा ``

प्रा. डॉ. शेख कलीम मोहियोद्दीन,
इतिहास विभाग प्रमुख,
मिल्लिया कला, विज्ञान व व्यवस्थापनशास्त्र
महाविद्यालय, बीड.

मध्यकाल में मखबरा बनाने की कला का अच्छा विकास हूआ मख़बरों को नये नये रूप में बनाया गया. सुंदर, विकसित आकर्षक मख़बरे बनाए गए. अल्तमश का मख़बरा, बल्बन का मख़बरा, गयासोद्दीन तूघलख़ का मख़बरा, सिकंदर लोधी का मख़बरा, शेर शहा सुरी का मख़बरा, हूमायूँ का मख़बरा, ताज महेल, बीबी का मख़बरा, गोल गूंबद, इब्राहिम रोज़ा आदि १२२८ में पहला मख़बरा सूलतान अल्तमश का बनाया गया. मख़बरो में बागात भी लगाए गए.

मध्य एशिया के तातारी तूर्क ख़बीलो ने १२०६ से १९४७ तक भारत के विविध भागों में हुकूमत की सय्यद और अफगानो का दौर बहूत ही संक्षिप्त था. तूर्क ये चाहते थे की उनके बाद उनकी सल्तनत के या उनके शाही खान्दान के निशान बाकी रहे इसलीए उन्होंने अलीशान, विशाल मख़बरे तामीर करवाएँ.

१५३० में भारत में मोगल सत्ता का संस्थापक बाबर का निधन हुआ. उसके बाद उस का बडा बेटा हुमायू मोगल सल्तनत का वारीस हुआ. वो बहुत ही नेक और फरिश्ता सिफ्त इन्सान था. इसी कारण जीवन भर वो समस्यों में घिरा रहा. १५४० मे शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को सत्ता से बेदख़ल कर दिया. हुमायूँ इस शब्द का अर्थ सूदैवी है. मगर वो जीवन भर भटकता रहा. अखेर कार इराण के बादशाह शाह तहमा सिप की मदद से उसने अपनी खोई हुई सत्ता फीर से १५५५ में प्राप्त करली. १५५६ में शाम के समय हुमायूँ अपने सितारों के तज्ञ (भविष्यकार) और नुजूमी से चर्चा करके ये निश्चित करने जा रहा था की वो किस दिन अपना राज्यभिषेक करे हुमायूँ खूद भी सितारों का ज्ञान और भविष्यवाणी पर विश्वास रखता था. मगर किस्मत को कुछ अलग ही मंजूर था. शाम की नमाज़ के लीए उसने अपनी मजलीस बरखास्त की वो अपने ग्रंथालय दिन पन्हा से उतर रहा था उसी समय उसका पैर सिढीयों से फिसल गया और वो निचे लूढखता हुआ फर्श पर गीर गया. दो दीन बेहोश रहा और इसी हालत में वो इस दुनीया से चला गया. प्रसिध्द इतिहासकार ईस्टीनले पोल ने बढेही अच्छे अंदाज में हुमायूँ के जीवन के बारे में कहा है.

"Humayun tumbled throughout his life and he tumbled out of it."१

हुमाँयु का मख़बरा उसकी पत्नी हमीदा बनो बेगम अलमारूफ हाजी बेगम ने तामीर करवाया. अकबर ने भी अपने जेब-ए-ख़ास से मख़बरे का कूछ हिस्सा तामीर करवाया. मौलवी बशीरोद्दीन अहमद अपनी किताब वाकीयात-ए-दारूल हुकूमत देहली ``मिर्झा हयात देहलवी`` ``चिराग देहली`` में सर सय्यद अहमद खॉन आसारूद सनादीद में, शाहज़ादा मिर्झा अहमद अख़तर गोरगानी`` में लिखते है की हुमायूँ का मख़बरा १५६९ में बनकर तामीर हुआ, इसे बनने के लीए सोला साल लगे इसको बनाने में उस समय में पंधरा लाख रूपये खर्च आया.``२ हुमायूँ का मख़बरा वास्तव में तैमूरीया खान्दान का कबरस्तान है. हुमायूँ का मख़बरे के बाजू में उसकी पत्नी हमीदा बानो और उसकी बेटी की खबरे है. मख़बरे के परीसर में औरंगजेब के बेटे मोहम्मद आझम और उसके पोते जहाँनदर शाह, फारूख सियर और रफीख उल-दरजात, रफीख-उद-दौला, और शाहजहाँ के बडे बेटे दारूल शकोह, और कई शाहज़ादो और शाहज़ादीयों और उमरा की ख़बरे है.``

``१८५७ की आज़ादी की पहली लढाई के दौरान मोगल खान्दान के आखरी बादशाह बहादुरशाह झफर और उनके शाहज़ादों ने हुमयूँ के मख़बरे में ही शरण की थी.``३ बहादूर श्हा के पुत्र मिर्झा मूघल, मिर्झा ख़िजर सूल्तान और मिर्झा अबू बकर की हत्या अंग्रेजों ने इसी मख़बरे में की थी. इनकी ख़बरे भी इसी बख़बरे के परीसर में है.

Scanned by CamScanner

इतिहासकार कहते हैं की तालमहेल का नक्शा हुमायूं के मख़बरे को देखकर ही बनाया गया था. ताजमहेल और हुमायूँ के मख़बरे में बहोत जगह साम्य (एक जैसापन) है. हुमायूँ का मख़बरा पुरानी दिल्ली में स्थीत है. मख़बरे के सामने हजरत निझामुद्दीन औलीया और हजरत अमीर खुसरोरह. की दरगाहें है. हुमायूँ का मख़बरा चूने और पत्थर से बनी फसील के दरम्यान है. जीसमें बाग भी है. इसमें मुघल गार्डन की तमाम खूबीया नझर आती है. हुमायूँ के मखबरे में प्रवेश करने के लिए दो विशाल गूंबद दार दरवाज़े है. एक दरवाज़ा पश्चिम में और दूसरा दरवाज़ा दक्षिण मे है. इन दरवाज़ो से मूघल सल्तनत का वैभव झलकता है. पश्चिम दरवाज़े में पत्थर के कमरे बनाए गए है. जो कारीगीरी का एक अच्छा नमूना है. हर कमरे में जाने के लीए स्वतंत्र अलग रास्ता है. और सुंदर सिढीया बनी हुई है. मखबरे के दक्षिण दरवाज़े के पास में कमरे बने हुए नही है. मगर दक्षिण दरवाज़े की दीवारों पर कारीगीरी के उत्तम नमूने हमे देखने के लिए मिलते है. दक्षिण दरवाजा संगे-ए-ख़ारा (एक प्रकार का निलगुन पत्थर) से बना हुआ है. जीन में संगे-ए-खारा के बेल बूटे बनाए गए है. जीन में लाल पत्थर के बेल बूटे बनाए गए है. दरवाजे में संग मरमर का उपयेग भी कीया गया है. दक्षिण दरवाज़े को अब Guest House बना दिया गया है.

मख़बरे के उत्तर दिशा की परिसर वाली दिवार के ठीक दरम्यान सात फीट उँचे चबूतरे पर एक इमारत है. जीस के मध्य में एक मेहराब दार कमरा है. यही पर एक बुरूज नूमा कूँवा है इसी कूंवे से ही मखबरे के बाग को पानी दिया जाता था. बाग के ठीक दरम्यान में हुमायूँ का मख़बरा बनाया गया है. बाग में बीच में एक पाँच फीट बूलंद और तीन सौ फीट चौकोन चबूतरा बनाया गया है. जीस के कोने गोल किए है. इस चबूतरे के किनो से एक पिटा हुआ चबूतरा बीस फीट उँचा और ८५ फीट चौकोन है. इसके कोने भी गोल किए गए है. चबूतरे के उपर के हिस्से में चौके बिछे हूए है. इसकी लंबाई एक सौ तीस फीट और चौढाई तीन सौ अठरा फीट है. इसपर एक फीट दस इँच की जालीया कठहरे की तरह लगी हुई है. नीचे के चबूतरे की लंबाई ३७३ फीट आठ इँच है. ये हर तरफ से बत्तीस फीट इँच और चार फीट उंचा है. उपर के चबूतरे से निचे का चबूतरा ३२ फीट है. जीसमें २८ सिढीयाँ है. दूसरे चबूतरे की पाँच सिढीयाँ है. चबूतरे में चारो तरफ एक एक दरवाज़ा और आठ आठ दर है. चारों तरफ के महराबी दर मीला कर कूल ४८ दर है और हर दर में ख़बरे ही ख़बरे है. हुमायूँ की ख़बर का तावीज बीलकूल सादा बहोत ही चमकदार संग-ए-मरमर का है. जीस पर कोई शिलालेख नही है. ख़बर के पास में संग-ए-मरमर का चबूतरा आठ फीट दस इँच लंबा, चार फीट चौढा, और ढाई फीट उँचा है. वो कमरा जीस में हूमायूँ की ख़बर है चौदा फीट ९ इँच चौकोन है. मख़बरे के नीचे वाले कमरे में जहाँ हिमायूँ की खबर है वहीं पास में हिमायूँ की तीन बेटीयाँ की खबरे है. चबूतरे के उपर चौबीस और दूसरे कमरों में १५० ख़बरे है. ये सब शाही खान्दान और उमरा की ख़बरे है. जनरल कंघम अपनी किताब में लिखता हे की मख़बरे की असली ईमारत का बाहेरी हिस्सा चौकोन है जीस के चारो कोने गोल है.``४

मख़बरे की प्रत्येक दिशा के दरम्यान एक बूलंद दरवाज़ा है. जीस के दोनों और की दिवारों पर दो मंजीला मेहराबे है इनके दरम्यान एक बूलंद मेहराब नूमा दर है. इस पर बेलबूटे और नक़्काशी की गयी है. मख़बरे के चोरो कोनों में असल इमारत के साथ चार और कमरे बनाए गए है. इन कमरों के दरम्यान पचास फीट बूलंद महराबे है. फ्रॅक्लीन अपनी किताब में लिखता है की इन महराबों पर १४ फीट उँची दिवारे अस्तवाने के थम को छूपाने के लीए बनाई गयी है. जीस पर ख़ूबे का तमाम वजन है. इनके रूख़ पर मेहराबो का दोहरा सिलसिला बनाकर चोटी तक बूलंद कर दिया गया है. और हर कोने पर छोटी बूरजी बना दि गयी है. इमारत की उत्तर दिशा वाली मेहराब से संग-ए-मरमर के इस कमरे में जाने का रास्ता है. जीस में हुमायूँ बादशाह की ख़बर है. कोनो के छोटे गूंबद दो मंजिला है. इन गूबंदो और दरम्यान के उपरी मंजिल के अतराफ एक तंग गॅलरी है और इसी के अनुसार नीचे के हिस्से में रास्ते बने हुए है. दरम्यान के कमरे में उपर की तरफ खिडकियों के दो सिलसिले है. उपर की खिडकीयाँ नीचे की खिडकीयों से कुछ छोटी है. फ्रंकलीन कहता है की इस हुजरे की चार बडी खिडकीयों की बूलंदी बीस फीट और इन के उपर की खिडकीयों की बूलंदी सोला फीट है. जीन के दरम्यान एक बडा कमरा है. खिडकियों की दूसरी कतार में भी एक कमरा है और एक चौकोन खिडकी है. जीसमें संग-ए-मर मर की नफीस जाली लगी हुई है. यहाँ का फर्श

Scanned by CamScanner

और दिवारें ६ फीट तक संग-ए-मरमर की है. दरवाज़ों की खिड़कीयों में संग-ए-मरमर की जालीयाँ लगी हुई हैं.

हुमायूँ के मख़बरे का गूंबद ताज महेल के गुंबद से ज्यादा दिलकश है. इस गूंबद की नई शक्ल मुघल शहंशाहों को कुछ ऐसी पसंद आयी के इन्होंने मस्जिद और मख़बरो के लीए यही अंदाज-ए-तामीर अपना लीया था. ताज महेल का गूंबद इसी गुंबद की नख़ल है. लेकीन वो हुमायूँ के मख़बरे के गूंबद की तरह खुबसूरत नही है. ताज महेल सफद संग-ए-मरमर के कारण से वो अपने फनकाराना हुस्न का जादू जगाता है. जब के हुमायूँ का मख़बरा और इसका गुंबद ताजमहेल से ज्यादा दिल आवेजां है. मिर्झा हयात देहलवी अपनी किताब चिराग देहली में लिखते हैं की ये ईमारत आगरा के ताजमहेल में पुरी तरह से नझर आती है. अगरचे हुमायूँ का मख़बरा सुंदरता में (खूबसुरती में) ताज महेल की बराबरी नही कर सकता क्यों के वो पूरा संग-ए-मरमर से बना हुआ है. मख़बरे को देखने वाले का दिल इस इमारत की कला से प्रभावीत हो जाता है. गूंबद के अतराफ जो जालीयाँ है वो हिंदुस्तान की उमदा तरीन जालीयों में से है.

कॅप्टन आर्जबर अपनी किताब में लिखता है की इस गूंबद की बूलंदी १४० फीट है. ये गूंबद सेंट पालके कलीसा के गूंबद का तीन चौथाई है. ये गूंबद सेंट पाल के चर्च के गूंबद और गोल गूंबद से छोटा है. हुमायूँ के मखबरे के गूंबद के अंदर विविध प्रकार के संग-ए- मरमर का फर्श है. गूंबद की अंदरूनी दिशा पर सूनहरी और चीनी का काम किया हुआ है. सबा वॉहद अपनी किताब हिंदी ईस्लामी फन-ए-तामीर में लिखते हैं की ``हुमायूँ का मख़बरा दोहरे गूंबद का कामयाब तरीन उदाहरन है. जहाँ अंदरूनी गुंबद उथला और जाम नूमा है और इसे लदावो से तामीर कीया गया है. उपर का क़ौल संग-ए-मरमर से बनाया गया है. गूंबद के दोनों कौलो के दरम्यान रास्ता है. बेरूनी कौल के नीचे ढोलने (एक तामीरी अंदाज) यानी (Drum) पर चौकोर झरोका भी रखा गया है. जो काफी दूर से नझर आता है. मख़बरा हुमायूँ में आराएश इस कमरे की छत पर है जो हुमायूँ के हुजरे ख़बर के दक्षिणी दिशा पर है. छत के हर कोने पर एक मज़बूत बूर्जी है. जीस के आठ सुतून है. इन बूर्जीयों के दरम्यान नीचे के हिस्से की मेहराब में छोटे छोटे हाल है. जीन के सामने चार चार सुतून छत को सहारा दिए हूए है. सामने के हर कोने पर छे फिट बूलंद मिनार है. इस तरह छत के आठो कोनो पर आठ मिनार है, गूंबद की छत पर कीसी ज़माने में एक बडा दारूल-उलूम था. मख़बरे के बालाई हिस्से में भूल भल्लीयाँ है. मखबरे के परीसर में एक सुंदर बाग है. हुमायूँ का मख़बरा मोगल दौर की कला स्थापत्य का एक उत्तम नमुना है.`` ये मख़बरा भारत और ईराणी कला का उत्कृष्ट नमुना माना जाता है. इस मख़बरे के निचे के हिस्से पर भारतीय और उपर के हिस्से पर ईराणी कला शैली का प्रभाव नझर आता है. पर्सी ब्राऊन कहता है की `` हुमायूँ का मख़बरा भारतीय कलाकारों ने बनाया हुआ पार्शियन नमूना है.``

संदर्भ :-

१) लेखक : मिर्झा मोहंमद ख़िजर : तारीख के झरोको से P.No. ५७ पब्लिकेशन : अख्तर कदा पब्लिकेशन औरंगाबाद.

२) लेखक : मिर्झा मोहंमद ख़िजर : तारीख के झरोको से P.No. ५७ पब्लिकेशन : अख्तर कदा पब्लिकेशन औरंगाबाद.

३) लेखक : मिर्झा मोहंमद ख़िजर : तारीख के झरोको से P.No. ५७ पब्लिकेशन : अख्तर कदा पब्लिकेशन औरंगाबाद.

४) लेखक : मिर्झा मोहंमद ख़िजर : तारीख के झरोको से P.No. ५९ पब्लिकेशन : अख्तर कदा पब्लिकेशन औरंगाबाद

५) Writer : K.M. Munshi. The Mughal Empire.

६) लेखक मा.म. देशमूख :- मोगल कालीन भारताचा इतिहास.

७) Writer Dr. R.C.Mujumdar :- The History and Culture of the Indian People Vol. VIth Mughal Empi

८) Writer :- A.L. Shriastava :- Mughal Empire Shershah and his successors.

९) Writer:- Meera Singh:- Medieval History of India.

१०) Writer:- S.R. Sharma:- Mughal Govt. And The Administration.

११) Writer:- Irfan Habib:- Aqraian, System of Mughal India(१९६३).

THIS QUARTERLY "POWER OF KNOWLEDGE" IS PRINTED BY, PUBLISHED BY & OWNED BY SAW. SARKATE LATA SADASHIV & PRINTED AT SHRADDHA ENTERPRIZES, OPP. TEHSIL OFFICE, NAGAR ROAD, BEED, TQ & DIST BEED - 431 122 (M.S.) & PUBLISHED AT GEORAI, DIST. BEED - 431 143(M.S.).
EDITOR : SARKATE SADASHIV HARIBHAU

RNI No.MAHAUL03008/13/2012-TC

ISSN 23204494

Scanned by CamScanner